

ॐ

वैदिक मन्त्र मीमांसा

अग्नि के त्रिविध स्वरूप एवं उनकी उपासना

मूल मन्त्र (ऋग्वेद २.१.३)

विधेम ते परमे जन्मन्त्रग्ने विधेम स्तोमैरवरे सधस्थे ।
यस्माद्योनेरुदारिथा यजे तं प्र त्वे हवींषि जुहुरे समिद्धे ॥

मन्त्र का शब्दार्थ (Word Meanings)

विधेम:	हम परिचर्या करें, उपासना करें।
ते:	तुम्हारी / आपकी।
परमे जन्मन्:	सबसे उत्कृष्ट जन्मस्थान में (द्युलोक या श्रेष्ठ स्थिति में)।
अग्ने:	हे अग्नि! / हे विद्वान्!
स्तोमैः:	स्तुतियों के द्वारा, स्तोत्रों से।
अवरे सधस्थे:	नीचे के (अर्वाचीन) सह-स्थान में (अन्तरिक्ष या व्यावहारिक जीवन में)।
यस्मात् योनेः:	जिस कारण से / जिस उत्पत्ति स्थान (पृथ्वी) से।
उदारिथः:	तुम प्रकट होते हो, प्रादुर्भूत होते हो।
यजे:	मैं यजन करता हूँ, संगतीकरण करता हूँ, पूजा करता हूँ।
तम्:	उस (स्थान या कारण) को।
प्र त्वे:	प्रकृष्ट रूप से तुममें।

हवींषि:	हव्य पदार्थों को (पुरोडाश या दान योग्य उत्तम पदार्थ)।
जुहुरे:	हवन करते हैं, अर्पित करते हैं।
समिद्धे:	प्रदीप्त होने पर (अग्नि के जलने पर या ज्ञान के प्रकाशित होने पर)।

ॐ आचार्यों के अनुसार विस्तृत अर्थ

१. आचार्य सायण के अनुसार (अधियज्ञ / कर्मकाण्ड परक अर्थ)

आचार्य सायण इस मन्त्र में अग्नि के तीनों लोकों (द्युलोक, अन्तरिक्ष और पृथ्वी) में विद्यमान स्वरूपों का वर्णन करते हैं:

भावार्थ: हे अग्नि! तुम्हारा जो परम उत्कृष्ट जन्मस्थान है अर्थात् 'द्युलोक' (सूर्य रूप में), वहाँ स्थित तुम्हारी हम स्तुति और परिचर्या करते हैं। द्युलोक से नीचे 'अन्तरिक्ष' (विद्युत रूप में) में स्थित तुम्हारी हम स्तोत्रों के द्वारा परिचर्या करते हैं। जिस पृथ्वी-रूपी योनि (उत्पत्ति स्थान) से तुम प्रादुर्भूत हुए हो (लौकिक अग्नि रूप में), मैं उस स्थान की पूजा करता हूँ। जब तुम भली-भांति प्रदीप्त हो जाते हो, तब अध्वर्यु आदि ऋत्विज तुममें पुरोडाश आदि हविष्य (हवन सामग्री) अर्पित करते हैं।

२. महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार (आध्यात्मिक एवं आधिभौतिक अर्थ)

महर्षि दयानन्द 'अग्नि' शब्द का अर्थ भौतिक अग्नि के साथ-साथ 'ज्ञान से प्रकाशित विद्वान्' के रूप में करते हैं:

भावार्थ: हे ज्ञान-स्वरूप विद्वान्! आपके जो उत्कृष्ट गुण और श्रेष्ठ विद्या रूपी जन्म (प्राकट्य) है, हम उसकी परिचर्या करें। अर्वाचीन (व्यावहारिक) सह-स्थान में हम उत्तम स्तुतियों से आपकी सेवा करें। जिस कारण (कठोर तप और पुरुषार्थ) से आप इस श्रेष्ठता को प्राप्त करते हैं, मैं उस कारण से संगति करूँ। जब आप ज्ञान से पूर्णतः प्रदीप्त (समिद्ध) होते हैं, तब लोग आपमें दान देने योग्य (हवींषि) उत्तम पदार्थों को अर्पित करते हैं (ताकि विद्या का प्रसार हो)।



मन्त्र का वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Approach)

आधुनिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में यह मन्त्र ऊर्जा संरक्षण और ऊर्जा के विभिन्न स्वरूपों (Forms of Energy) का एक अत्यंत सटीक वर्णन है। विज्ञान मानता है कि ब्रह्मांड में ऊर्जा सर्वव्यापक है और इसके मुख्य रूप से तीन स्तर हैं, जिन्हें मन्त्र में स्पष्ट किया गया है:

१. परमे जन्मन् (The Highest Cosmic Energy): यह Nuclear Fusion (नाभिकीय संलयन) का प्रतीक है जो सूर्य और तारों (द्युलोक) में होता है। यह ऊर्जा का परम और सर्वोच्च स्रोत है (Solar/Cosmic Energy)।

२. अवरे सधस्थे (Atmospheric Energy): यह वायुमंडल में व्याप्त Electrical Energy (विद्युत ऊर्जा) और प्लाज्मा का प्रतीक है, जो बादलों के घर्षण और बिजली (Lightning) के रूप में अन्तरिक्ष में सह-स्थित है।

३. यस्मात् योने: (Terrestrial/Chemical Energy): यह पृथ्वी पर उत्पन्न होने वाली भूतापीय ऊर्जा (Geothermal) और रासायनिक ऊर्जा (Chemical Energy/Combustion) है जो घर्षण या ईंधन से प्रकट होती है।

ऊष्मगतिकी (Thermodynamics) और यजन:

मन्त्र का अंतिम भाग (त्वे हवींषि जुहुरे समिद्धे) स्पष्ट करता है कि जब ऊर्जा अपने प्रदीप्त (Active State / Ignition point) रूप में होती है, तब यदि उसमें भौतिक पदार्थ (Matter/हवि) डाले जाएं, तो वह पदार्थ नष्ट नहीं होता, बल्कि उसका ऊर्जा में रूपांतरण (Mass-Energy Equivalence) हो जाता है। हवन की प्रक्रिया इसी वैज्ञानिक सिद्धांत पर आधारित है, जहाँ अग्नि (Thermal Energy) में दी गई जड़ी-बूटियाँ (Matter) सूक्ष्म होकर वाष्प और गैसों के रूप में वायुमंडल में फैलकर पर्यावरण को शुद्ध और लाभान्वित करती हैं।

निष्कर्ष: यह मन्त्र केवल एक कर्मकाण्डीय प्रार्थना नहीं है, बल्कि ब्रह्मांडीय ऊर्जा के त्रिविध स्वरूप (Cosmic, Atmospheric, Terrestrial) और पदार्थ के ऊर्जा में रूपांतरण (Combustion & Transformation) का एक उत्कृष्ट वैदिक-वैज्ञानिक सूत्र है।

ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउन्डेशन

प्रस्तुति: आचार्य कपिल यादव

नित्य मन्त्रों के सस्वर पाठ की वीडियो के लिए संस्था की सदस्यता लें।

सम्पर्क सूत्र: 8756390767